विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, फाल्गुन पूर्णिमा, 16 मार्च, 2014 वर्ष 43 अंक 9

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

येसं सम्बोधियङ्गेसु, सम्मा चित्तं सुभावितं।
आदानपटिनिस्सग्गे, अनुपादाय ये रता।
खीणासवा जुतिमन्तो, ते लोके परिनिब्बुता॥

धम्मपद- ८९, पण्डितवग्गो.

संबोधि के अंगों में जिनका चित्त सम्यक प्रकार से भावित (अभ्यस्त) हो गया है, जो परिग्रह का परित्याग कर अपरिग्रह में रत हैं, आश्रवों (चित्तमलों) से रहित ऐसे द्युतिमान (पुरुष ही) लोक में निर्वाण-प्राप्त हैं।

आनंदबोधि

कोशलदेश की राजधानी सावत्थी (श्रावस्ती)। श्रेष्ठी अनाथपिंडिक ने करोड़ों की संपदा लगाकर जेतवन में महाविहार बनवाया। भगवान वर्षावास के दिनों में उस विहार में रहते और लोगों को धर्म सिखाते। वर्षावास के बाद वे अन्य प्रदेशों के लोगों को धर्म बांटने के लिए चारिका के लिए निकल पड़ते। भगवान के निवासकाल में विहार में जो चहल-पहल रहती वह उनकी अनुपस्थिति में बहुत कम हो जाती। वातावरण उतना जीवंत नहीं रहता, फीका पड़ जाता। कुछ एक नगर-वासी भक्तजन विहार में आते। भगवान के निवास की खाली कुटी के सामने श्रद्धा के फूल चढ़ाकर चले जाते। पर उन्हें संतोष नहीं होता। श्रद्धा व्यक्त करने के लिए उन्हें कोई ठोस आधार चाहिए था। श्रेष्ठी अनाथपिंडिक को यह कमी खलती। लोग चाहते थे कि भगवान की अनुपस्थिति में वहां कोई मंदिर हो जहां वे अपनी श्रद्धा प्रकट कर सकें। उन दिनों यह प्रथा थी। लोग अपने श्रद्धाभाजन देवी, देवता, यक्ष, ब्रह्म अथवा संतों के नाम पर चैत्य बनाते थे, मंदिर बनाते थे। इनमें अपने इष्ट की मूर्ति अथवा चिह्न स्थापित करते थे। इन चैत्यों व देव-स्थानों पर अकेले अथवा समूह में भक्तजन जाते, पूजन-अर्चन करते, पत्र-पुष्प चढ़ाते, धूप-दीप जलाते, मनौती मानते और मनौती पूरी होने पर उत्सव-मंगल मनाते। यों इन देव-स्थानों पर बड़ी धूम-धाम और चहल-पहल बनी रहती।

श्रेष्ठी अनाथपिंडिक चाहता था कि ऐसा ही कुछ जेतवन महाविहार में भी हो, जिससे भगवान की अनुपस्थिति में भी वहां चहल-पहल बनी रहे। उसने अपनी मनोकामना भिक्षु आनंद के सामने प्रकट की। आनंद ने बहुत व्यवहार-कौशल्य से यह बात भगवान तक पहुँचायी। उन्होंने भगवान से पूछा –

"भंते भगवान! चैत्य कितने प्रकार के होते हैं?"

भगवान ने कहा, "तीन प्रकार के – शारीरिक, उद्देसिक और पारिभोगिक।" आनंद ने पूछा "भगवान! क्या बुद्ध के जीते जी उनके नाम पर कोई चैत्य बनाया जा सकता है?"

भगवान ने कहा "शारीरिक चैत्य तथागत के शरीर त्यागने पर उनके अस्थि-अवशेषों पर ही बन सकता है। उद्देसिक चैत्य में मूर्ति, चिह्न आदि की स्थापना द्वारा मनोकल्पना की प्रमुखता होती है जो कि अवांछनीय है। हां, पारिभोगिक चैत्य तथागत के जीवनकाल में भी बन सकता है।"

आनंद ने अनाथपिंडिक की इच्छा सामने रखते हुए जेतवन में ऐसा एक पारिभोगिक चैत्य स्थापित करने की भगवान से स्वीकृति मांगी ताकि उनकी अनुपस्थिति में जेतवन जनशून्य और उत्साहशून्य न हो जाया करे।

यह तो स्पष्ट था कि भगवान के परिनिर्वाण के बाद उनके द्वारा प्रयोग में लाये हुए भिक्षापात्र, चीवर, लकुटी आदि वस्तुओं पर चैत्य बनने लगेंगे। परंतु जीते जी वे ऐसी परंपरा स्थापित करना चाहते थे जो कि परम अर्थ के क्षेत्र में स्वस्थ हो, कल्याणकारिणी हो। वह अपनी उपभोग की हुई किसी भौतिक वस्तु पर कोई चैत्य बनवाना नहीं चाहते थे। लोकोत्तर निर्वाण की प्राप्ति के लिए जिसका उपभोग किया वह तो बोधिवृक्ष था। अतः आनंद का ध्यान उसी ओर खींचते हुए भगवान ने कहा, "तथागत के जीते जी **बोधिवृक्ष** ही **पारिभोगिक चैत्य** होता है जिसकी छाया में बैठकर अन्य लोग भी निर्वाण के सुख का रसास्वादन कर सकें।"

आनंद को यह बात बहुत भायी। उसने महामोग्गल्लान से प्रार्थना की और उनके जरिए बोधगया के बोधिवृक्ष का बीज मँगवाया और महाराज पसेनदि (प्रसेनजित), माता विशाखा तथा अन्यान्य उपासकों की उपस्थिति में जेतवन के मुख्य द्वार के समीप श्रेष्ठी अनाथपिंडिक द्वारा इसका आरोपण करवाया। जब वृक्ष बढ़कर तैयार हुआ तब चूंकि यह आनंद के सत्प्रयत्नों से लगाया गया था इसलिए यह वृक्ष 'आनंदबोधि' कहलाया।

आनंद ने भगवान से प्रार्थना की कि जिस प्रकार उन्होंने बोधिवृक्ष के नीचे रात भर साधना की थी, उसी प्रकार यहां भी करें। पहली बार सम्यक-संबोधि जगाने वाली साधना तो अद्वितीय ही होती है। फिर भी भगवान ने साधकों के कल्याण के लिए आनंदबोधि के नीचे एक पूरी रात निरोध समापत्ति की साधना की और उस स्थान के अणु-अणु को निर्वाणधातु और धर्मधातु की तरंगों से आप्लावित कर चिरकाल के लिए परम पावन बना दिया।

सामान्य गृहस्थ ही नहीं, अनेक ऐसे भिक्षु भी जो कि भगवान के साधना-संबंधी गंभीर धर्म में परिपक्व नहीं हो पाये थे, वे भगवान

के जीवनकाल में ही इस आनंदबोधि रूपी चैत्य पर श्रद्धा-सुमन अर्पित कर अपने मन को प्रसन्न करते रहे, पुण्य अर्जित करते रहे, और यह परंपरा आगे भी चलती रही। परंतु साथ-साथ एक अन्य परंपरा गंभीर साधकों की भी थी। उन्होंने भगवान के जीवनकाल में और तत्पश्चात भी आनंदबोधि का उपयोग साधना के लिए किया। आनंदबोधि आज भी जीवित है। संभवतः यह संसार का सबसे पुरातन वृक्ष है। भारतवर्ष में पुनर्जागृत विपश्यना के गंभीर साधक आज भी जब इस पावन वृक्ष के नीचे बैठकर विपश्यना साधना करते हैं तब देखते हैं कि कितना शीघ्र उनका मानस अनित्यबोध की धर्म-तरंगों से आप्लावित होने लगता है।

(वि.वि.वि. द्वारा प्रकाशित 'अनाथपिंडिक' जीवनी पुस्तक से साभार उद्धृत)

पगोडा परिसर में 'जयश्री महाबोधि' वृक्षारोपण संपन्न

गत २ मार्च को विश्व विपश्यना पगोडा परिसर के पूर्वोत्तर भाग में श्रीलंका से लाये गये 'जयश्री महाबोधि' वृक्ष के पौधे का रोपण-समारोह विधिवत संपन्न हुआ। यह उसी बोधिवृक्ष की शाखा है जिसके नीचे बैठ कर बोधिसत्त्व सिद्धार्थ गौतम को सम्यक संबोधि प्राप्त हुई थी। अर्थात वे निर्वाणिक अवस्था प्राप्त करके सदा के लिए जीवन-मरण के बंधन से मुक्त हो गये थे और उसी के आस-पास सतत सात सप्ताह तक निर्वाणिक सुख की अनुभूति करते रहे। इस प्रकार अरहंत हो कर वे सम्यक संबुद्ध कहलाये। उन्होंने न केवल अपनी मुक्ति साध ली, बल्कि अन्य अनेकों को भवमुक्त होने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। उनकी ध्यान-साधना की सफलता से यह वृक्ष भी धन्य हो उठा। अब यह **'महाबोधि'** वृक्ष कहलाने लगा और इसकी छायातले ध्यान-भावना करने के लिए हर व्यक्ति लालायित रहने लगा। तथागत भगवान बुद्ध की सिखायी हुई विद्या का अभ्यास करके अनेकों का मंगल-कल्याण हुआ।

इसी महाबोधि वृक्ष की शाखा भगवान बुद्ध के जीवनकाल में अनाथपिंडिक के आग्रह और भगवान के उपस्थाक (निजी सहायक) रहे भिक्षु आनंद के प्रयास से श्रावस्ती में बने अनाथपिंडिक महाविहार में लगायी गयी थी। जैसे कि ऊपर बताया गया है, यह भिक्षु आनंद के सत्प्रयास से लगाया गया था इसलिए **'आनंदबोधि'** के नाम से विश्व विख्यात हुआ।

भगवान बुद्ध के ढाई सौ वर्ष पश्चात भारत में सम्राट अशोक का राज्य हुआ। वह सम्राट जो अपने क्रूर कर्मों के कारण **'चंड अशोक'** के नाम से जाना जाता था, इस विद्या के संपर्क में आकर इतना बदल गया कि उसने अपना सारा जीवन लोक-कल्याण में लगा दिया। अब वह **'धम्म अशोक'** के नाम से जाना जाने लगा। उसने गांव-गांव में विहार बनवाये और प्रत्येक विहार में एक स्तूप भी। इस प्रकार उसने ८४,००० स्तूप बनवाये, जिनमें भगवान बुद्ध की शरीर-धातुओं को सन्निधानित करवाया ताकि उसकी सारी प्रजा भगवान बुद्ध का सान्निध्य अनुभव कर सके और उनकी सिखायी हुई विद्या का अभ्यास करके धर्म-रस का आस्वादन करके अपना कल्याण साध सके। इसी कल्याण-भावना से प्रेरित होकर उसने पड़ोसी देशों में अपने धर्मदूत भेजे। उसने इस विद्या को ही नहीं, भगवान बुद्ध की वाणी और धातुओं को भी भारत के बाहर भेजा। उसने अपने प्रिय पुत्र महेंद्र को भिक्षुसंघ को समर्पित कर दिया। अरहंत भिक्षु महेंद्र को धर्म सिखाने के लिए श्रीलंका भेजा। श्रीलंका में राजा देवानां पियतिस्स ने उनका स्वागत किया और धर्म सीख कर श्रद्धालु बना। भिक्षु महेंद्र ने वहां बोधगया के बोधिवृक्ष की पौध लगवाने का प्रस्ताव किया। राजा पियतिस्स ने इसके लिए महाराज सम्राट अशोक से निवेदन किया और सम्राट अशोक ने उसके आग्रह को स्वीकार करते हुए भिक्षुणी बन कर अरहंत हुई अपनी पुत्री संघमित्रा के साथ बोधिवृक्ष की दक्षिणी शाखा की एक पौध भिजवायी, जिसे अनुराधपुरा में रोपित किया गया। वहां लगने पर इसे **'जयश्री महाबोधि'** नाम दिया गया। तब से लेकर आज तक यह वृक्ष अखंड रूप से जीवित है और विश्व के सबसे पुराने वृक्षों में से एक माना जाता है। इसकी शाखाएं विश्व के कुछ एक अन्य देशों में भी लगायी गयीं जहां वे लहलहा रही हैं। लोग इसकी पूजा करते हैं और ध्यान करने वाले इसके नीचे बैठ कर ध्यानलाभी होते हैं।

उसी इतिहास को दुहराते हुए अब **'जयश्री महाबोधि'** की एक शाखा आधिकारिक रूप से श्रीलंका से पुनः भारत आयी है। अनुराधपुरा के आदरणीय भंते अटमस्थानाधिपति (अनुराधपुरा क्षेत्र के आठ धर्म-स्थलों के अधिपति) नायक डॉ. पल्लेगम सिरिनिवास नायक थेर, अपने सचिव, सहायक तथा अन्य कई (कुल नौ) भिक्षुओं तथा कुछ एक गृहस्थों के साथ इसे लेकर आये और पगोडा परिसर में आयोजित एक समारोह में बोधिवृक्ष के इतिहास का उल्लेख करते हुए इसे विधिवत विपश्यना की प्रमुख आचार्या श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का के हाथों रोपित करवा कर, इसके आधिकारिक समर्पण की घोषणा की। पूज्य श्रीमती इलायचीदेवी ने स्वीकार करते हुए इसे **'सद्धम्म सिरि महाबोधि'** नाम से संबोधित किया है। इस प्रकार अब विश्व के इतिहास में यह इसी नाम से जाना जायगा। ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, विपश्यना विशोधन विन्यास तथा धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र के सभी ट्रस्टियों ने मिल कर इस रोपण को मिट्टी तथा पानी डाल कर सफल बनाया। लगभग ३००० प्रत्यक्षदर्शियों ने अनुमोदन करते हुए साधुकार किया। समारोह में श्रीलंका की कॉन्सुलेट जनरल कु. उपेक्खा समरतुंगा और उप-कॉन्सुलेट जनरल श्री सेनारथ दिस्सनायके भी उपस्थित थे।

समारोह में भाग लेने के लिए भारत में रहने वाले श्रीलंका के अनेक भिक्षु तथा भारत के अनेक क्षेत्रों से लगभग ६०-७० भिक्षुओं के अतिरिक्त बड़ी संख्या में गृहस्थ, विपश्यना के कई भिक्षु आचार्य, अनेकों की संख्या में अन्य आचार्य-आचार्याएं तथा उपासक-उपसिकाओं ने भाग लिया। मंच के आस-पास बने पंडालों में स्थानाभाव के कारण बड़ी संख्या में लोगों को पगोडा के मुख्य कक्ष में बैठाया गया जहां सारा कार्यक्रम देख और सुन सकने की समुचित व्यवस्था की गयी थी। इसके पश्चात भिक्षुओं सहित सब के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। भिक्षुओं के लिए संघदान का आयोजन किया गया था, जिसमें भाग लेकर गृहस्थ लोग पुण्यलाभी हुए और मंगलमैत्री का अनुमोदन करके धन्यता का अनुभव किया।

आदरणीय भंते अटमस्थानाधिपति नायक डॉ. पल्लेगम सिरिनिवास नायक थेर ने बोधिवृक्ष की सुरक्षा करने के उपाय बताया और लोगों से अनुरोध किया कि इसकी जड़ में कभी दूध,

तेल आदि जैसे पदार्थ बिल्कुल न डालें। पौधे की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्टेनलेस स्टील की मोटी जाली से बना एक बड़ा पिंजड़ानुमा चौकोर घेरा रख दिया गया ताकि जाने-अनजाने कोई इसके समीप जाकर इसे क्षति न पहुँचा सके। खाद-पानी देने के लिए इस घेरे में दरवाजा लगा है जिसे खोल कर ही पौधे के पास पहुँचा जा सकता है।

शीघ्र ही यह पौधा विशाल वृक्ष का रूप धारण करेगा। साधक भी इसी प्रकार सद्धर्म में प्रगति करते रहें। सब का मंगल हो!

-- **विपश्यना विशोधन विन्यास**

'सद्धम्म सिरि महाबोधि', जो श्रद्धापूर्वक श्रीलंका से लाया गया

वृक्षारोपण के बाद माताजी पानी डालती हुई, साथ में आदरणीय भंतेजी अपने हाथ से मिट्टी-पानी डाल कर पौध समर्पित करते हुए

विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा में पालि पाठ्यक्रम-२०१४

ग्लोबल पगोडा में आवासीय पाठ्यक्रम– सैद्धान्तिक (परियत्ति) और विपश्यना (पटिपत्ति), पालि व्याकरण, सुत्त इत्यादि :–

९० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - ०१-०६-२०१४ से ३०-८-१४ तक; केवल पुरुषों के लिए, आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - ३० एप्रैल २०१४;

६० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - १०-१०-२०१४ से १०-१२-२०१४ तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - १ सितंबर २०१४;

सबके लिए कंप्यूटर पर आवेदन पत्र – www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं.

प्रवेश योग्यताएं :-- वे साधक जिन्होंने -- १) कम से कम **तीन १०-दिवसीय** शिविर तथा **एक सतिपट्ठान-** शिविर किये हों।

२) एक वर्ष से नियमितरूप से दो घंटे की दैनिक साधना करते हों।

३) एक वर्ष से पंचशील का कड़ाई से पालन कर रहे हों।

४) कम से कम १२वीं कक्षा पास होने का प्रमाण-पत्र साथ हो।

संपर्क एवं कार्यस्थल : विपश्यना विशोधन विन्यास (**V.R.I.**), **ग्लोबल विपश्यना पगोडा**, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– डॉ शारदा संघवी – फोनः (२३०९५४१३) ९२२३४६२८०५, २) श्रीमती बलजीत लाम्बा : फोनः ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुर्लेकर: मो– ०९८२०५८३४४०.

ईमेलः mumbai@vridhamma.org, director@vridhamma.org;

प्रो. अंगराज चौधरी का पालि विद्वान के रूप में सम्मान

वि.वि. विन्यास में सेवारत प्रो. अंगराज चौधरी को गत १ मार्च को "India Foundation के Centre for studies of Religion & Society द्वारा बुद्धिस्ट और इंडिक विश्वविद्यालय, सांची के तत्वावधान में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय धर्म-धम्म कॉन्फरेंस में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा शॉल, अजंता के एक प्रसिद्ध चित्र, श्रीफल आदि से पालि विद्वान के रूप में सम्मानित किया गया।

नव नियुक्तिया

सहायक आचार्य

१. श्रीमती कला वासनिक, चंद्रपुर
२. श्रीमती वाणी कोवेलामुदी, हैदराबाद
३. श्रीमती उर्वी सावजानी, राजकोट
४. श्री जॉन मेंडोंचा, सुरेंद्रनगर
५. डॉ. सुरेश कोटांगळे, भंडारा
६. श्री अनिल सपकाळे, उल्हासनगर
७. श्री महावीर शेटे, कोल्हापुर
8. Mr. Michel Brissot, France

बालशिविर शिक्षक

१. श्री विशाल कांबले, वाई
२. कु. कंचन पाटिल, नाशिक
३. श्रीमती सुनयना अग्रवाल, नाशिक
४. श्री दीपक गढे, नाशिक
५. श्रीमती आरती तोषणीवाल, नाशिक
६. श्रीमती पुनम कुंभारे, लोणावला
७-८. श्री अनिल एवं श्रीमती अंकिता मोहिते, रायगड
९. श्री संतोष मोहिते, रत्नागिरि
१०. श्री संदीप कांबले, रत्नागिरि
११. श्रीमती शोभा राजमाने, रत्नागिरि
१२. श्रीमती युगंधरा राजशिरके, रत्नागिरि
१३, श्रीमती प्रतिभा साठे, पुणे
१४. कु. साराह रंगूनवाला, पुणे
१५. श्री दीपक सालुंके, इचलकरंजी
१६. डॉ. प्रज्ञा पाटिल, इचलकरंजी
१७. कु. प्रियंका पाटिल, इचलकरंजी
१८. श्री श्यामलाल कलानी, कोल्हापुर
१९-२०. श्री संदीप एवं श्रीमती दीपा सरनायक, कोल्हापुर
२१. कु. मृणालिनी बेलवलकर, जयसिंहपुर
२२-२३. श्री अरुणकुमार एवं श्रीमती सपना सेठी, भोपाल
२४. श्रीमती सुजाता चकमा, चेन्नई
२५. श्री आर.आर. रामकृष्णन, चेन्नई
२६. श्री के. बागीरथन, चेन्नई
२७. श्री जयशंकर, कोयमबटूर
२८. श्री राकेश निर्मल, मदुराई
२९. श्रीमती बिंदियाबेन जोशी, राजकोट
३०. श्रीमती दिव्याबेन शुक्ला, राजकोट
३१. श्रीमती गार्गीबेन ठक्कर, राजकोट
३२. श्रीमती गीताबेन रायचूरिया, राजकोट
३३. श्रीमती किंजलबेन शाह, राजकोट
३४. श्रीमती कीर्तिबेन वेगदा, राजकोट
३५. श्रीमती कीर्तिबेन सापरिया, राजकोट
३६. श्रीमती मनीषाबेन पटेल, राजकोट
३७. श्रीमती मंजुलाबेन पंभार, राजकोट
३८. कु. मयूरीबेन बोसामिया, राजकोट
३९. श्रीमती नीलमबेन लाठीगरा, राजकोट
४०. श्रीमती समजूबेन तांती, राजकोट
४१. श्रीमती उमाबेन पटेल, राजकोट
४२. श्रीमती वीनाबेन जालावाडिया, राजकोट
४३. श्री अनिल बोरकर, गोवा
४४. श्री राजीव डोगरे, रायगड
४५. डॉ. श्रीमती भारती अंकुश, नवी मुंबई
४६. श्री नरेंद्र गाडे, नवी मुंबई
47. Mr. Allen Hsiao, Taiwan
48. Mr. Bo Rui Chen, Taiwan
49. Mr.Hsiang-Lai T, Taiwan
50. Ms. Li-Yung Yu, Taiwan
51. Ms.Mei-Hua Liu, Taiwan
52. Mrs. Yu Chang, Taiwan
53. Ms. Yu Jung, Chiu Taiwan
54. Dr Liu Jie, China.

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

2014 में निम्न अवसरों पर पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

बुद्धपूर्णिमा, रविवार, 18 मई, आषाढ़ी पूर्णिमा, रविवार, 13 जुलाई तथा **पूज्य गुरुदेव की पुण्य-तिथि** के उपलक्ष्य में **रविवार 28 सितंबर को; समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। यहां 3 बजे दिवंगत गुरुदेव के रेकार्डेड प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग **संपर्क**: फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, (**फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन)
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

'धम्मालय' अतिथि गृह का उद्घाटन समारोह

*आगामी २७ अप्रेल को पगोडा परिसर में पर्यटकों के लिए संपूर्ण सुविधा के साथ बने नव निर्मित भवन **'धम्मालय'** का उद्घाटन समारोह आदरणीय बरमी भिक्षु की उपस्थिति में संपन्न होगा।*

मंगल मृत्यु

१. भुज-कच्छ की ६९ वर्षीय वरिष्ठ सहायक आचार्य डॉ. (मिस) शांतुबेन पटेल की मृत्यु २९ जनवरी को हुयी। वे लक्षणहीन पेट के कैंसर से पीड़ित थीं। यद्यपि आखिरी कुछ दिनों भयंकर पीड़ा हुयी, लेकिन अंतिम क्षण बहुत ही शांतिपूर्वक बीते।

उनकी सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने मूक-वधिर, अल्पबुद्धि आदि से विकलाङ्ग बच्चों को बहुत ही सफल तरीके से आनापान और विपश्यना सिखायी।

शोध करने वाले वैज्ञानिकों ने प्रथम बार किये गये इस उत्तरोतर प्रगति करने वाले स्तुत्य प्रयास का अनुसरण किया। वि. वि. वि. ने उनके प्रयासों का आभार माना तथा उनके शोध पत्र प्रकाशित किये हैं, जिन्हें दुनिया भर में सराहा गया है।

विश्व विपश्यना पगोडा परिसर में विशोधन के लिए वृहत् पुस्तकालय

पू. गुरुजी की महती इच्छा विशोधन को बढ़ावा देने और उसके लिए एक पुस्तकालय बनाने की थी, जिसमें विशोधन के लिए सारी उपयुक्त पुस्तकें हों। हमें यह समाचार देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पू. गुरुजी की यह इच्छा पूरी हो गयी। पूजनीया माता जी ने 'ग्लोबल विपस्सना पगोडा' पर स्थापित इस पुस्तकालय का उद्घाटन १९ जनवरी, २०१४ को अपने कर कमलों से किया। यह पुस्तकालय **विपश्यना विशोधन विन्यास** (VRI) की देख-रेख में है।

फिलहाल इस पुस्तकालय में लगभग दस हजार १०,००० पुस्तकें हैं जिनमें एन-साइक्लोपीडिया डिक्शनरी (शब्दकोश), जर्नल, विपश्यना संबंधी पुस्तकें, विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, अन्य धर्मो एवं दर्शनों पर प्रकाशित पुस्तकें शामिल हैं। इस पुस्तकालय में लगभग ४०,००० पुस्तकों के लिए स्थान है। साथ ही एक विशोधनालय भी है जिसे विशोधक (सिर्फ स्टुडेन्ट्स) उपयोग में ला सकते हैं। पुस्तकालय का शेष भाग केवल साथकों तथा कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित है। वे इसका उपयोग नीचे दी गयी समय-सारिणी के अनुसार कर सकते हैं।

सोमवार से शुक्रवार (बुधवार को छोड़कर); दोपहर १२ बजे से ४ बजे शाम तक।

शनिवार और रविवार – दोपहर १२ बजे से ५ बजे शाम तक। □

दोहे धर्म के

इस धरती का वृक्ष का, ऐसा तेज प्रताप।
सबकी मंशा पूर्ण हो, दूर होंय दुःख ताप॥

बोधिवृक्ष की छांह में, जगा बोधि का ज्ञान।
बोधिसत्त्व गौतम जहां, बने बुद्ध भगवान॥

बोधिमंड के देवगण, होवें पुलकित प्राण।
आओ! फिर सुमरण करें, शुद्ध बोधि का ज्ञान॥

सभी कामना पूर्ण हो, बोधि कल्प की छांह।
जन जन में जागे धरम, यही एक बस चाह॥

ज्यों गौतम सिद्धार्थ में, जागी बोधि अनंत।
त्यों हम सब में भी जगे, होय दुःखों का अंत॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

आठ अंग रो धरम पथ, दियो बुद्ध भगवान।
पग पग चलतां आप ही, पावां पद निरवाण॥

मंगळमयी विपस्सना, विधि दीनी भगवान।
प्रतिदिन रै अभ्यास स्यूं, साधै निज कल्याण॥

हानि लाभ निंदा सुजस, सुख दुख मान अपमान।
चित विचलित होवै नहीं, रवै धरम रो ध्यान॥

मिथ्या पूजन अरचना, मिथ्या किरियाकांड।
चाखी बूंद न धरम री, रहग्यो रीत्यो भांड॥

पूजन अरचन बंदना, सुद्ध धरम री होय।
जीवन मँह जागै धरम, तो ही मंगळ होय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557, फाल्गुन पूर्णिमा, 16 मार्च, 2014**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org